

अखिल भारतीय अंतर विभागीय/ अंतर मंत्रालय  
हिंदी संगोष्ठी, शिलाँग

भारतीय कैलेंडर के जरूरत एवं औचित्य का परिचय

डॉ. एल. विश्वास

खगोल विज्ञान केंद्र, कोलकाता  
भारत मौसम विज्ञान बिभाग  
( पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय )

भारत के विभिन्न समाजों में इतनी ज्यादा विभिन्नता है कि एक क्षेत्र के लोगों द्वारा पालन करने वाले कैलेंडर को दूसरे क्षेत्र के लोग नहीं समझ पाते।

कुछ कैलेंडर एक राशि से दूसरे राशि तक होनेवाली सूर्य की चाल पर आधारित हैं एवं इन्हें सोलर कैलेंडर कहते हैं।

यहाँ तक कि विभिन्न सोलर कैलेंडरों में भी आपसी विभिन्नता है जैसे एक ही महीने की शुरुवात अलग अलग राज्यों में अलग अलग समय पर होती है।

कुछ अन्य कैलेंडर चन्द्रमा की चाल पर आधारित हैं एवं ये कैलेंडर लूनर महीने पर आधारित हैं जो चन्द्रमा के चरणों(चन्द्रमा के फेसेस)पर निर्भर हैं।

इन्हें लूनी सोलर या केवल लूनर कैलेंडर कहते हैं और वो सोलर महीने से संबंधित होते हैं।

लेकिन हमारे देश के विभिन्न क्षेत्रों में जहाँ लूनर कैलेंडर का इस्तेमाल नागरिक दिनांकों के निर्धारण में होता है वहाँ इसकी एकरूपता में कमी है।

एकसन्तोषजनक कैलेंडर बनाने की समस्याओं ने ही शुरुआती मनुष्यों को एस्ट्रोनोमी की ओर खींचा । प्राथमिक आकाशीय पिण्ड जिनके गति का इस्तेमाल समय संजोने में होता था :-

- 1) घूर्णन पृथ्वी, जो निरंतर दिन – रात की उत्पत्ति करती है ।
- 2) चन्द्रमा , जिसकी आकाशीय घूर्णन के कारण विभिन्न चरणों की उत्पत्ति होती है और महीनों का निर्धारण होता है ।
- 3) सूर्य , जिसकी स्पष्ट घूर्णन के कारण मौसमों का निर्माण होता है एवं वर्ष की प्राप्ति होती है ।

महीना अथवा चांद्रमासलगभग 29.30 दिनों से 29.8 दिनों तक बदलते हैं । इनकी औसत लंबाई 29.53 सौर दिन होती है ।

विषुवोंकी अग्रगति के कारण , नवीन समनुक्रमणिक बिंदु हर वर्ष 50 सेकंड्स पश्चिम की ओर पीछे चला जाता है । अतः उष्णदेशीय वर्ष की लंबाई अविरत नहीं होती ।

एस्ट्रोनोमीकल महीने एवं वर्ष की सही लंबाई जो कुछ भी हो , हमारे रोजाना के इस्तेमाल के लिए नागरिक कैलेंडर को बनाने में निम्न विषयों को ध्यान में रखना अनिवार्य हैं :-

- 1) नागरिक वर्ष एवं महीने में अविभाज्य दिनों की संख्या होनी चाहिये ।
- 2) वर्ष एवं महीने के प्रारंभिक दिवस उपयुक्त रूप से परिभाषित होने चाहिये । दिवसों को वास्तव में मौसम के अनुरूप होना चाहिये ।
- 3) बारह चांद्रमास का योग 354 दिनों के बराबर होता है जोकि एक वर्ष से लगभग 11 दिन कम पड़ते हैं । इसलिए बारह लूनर महीने एक वर्ष के बराबर नहीं होते । इस विसंगति को समायोजित करना अनिवार्य है ।
- 4) निरंतर दिनांकन के प्रयोजनों के लिए एक युग का इस्तेमाल होता है और इसे ठीक से परिभाषित करना चाहिये ।
- 5) कैलेंडर में इस्तेमाल करने के लिए नागरिक दिवस को खगोलीय दिवस से विशिष्ट रूप में परिभाषित करना चाहिये ।

इन मुसीबतों का दोष – रहित एवं संतोषजनक समाधान ढूँढने के लिए 1952 में तत्कालीन प्रधानमंत्री स्वर्गीय पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने पहल की ।

आजादी के तुरन्त बाद, तत्कालीन प्रधानमंत्री स्वर्गीय पण्डित जवाहरलाल नेहरू को राष्ट्रीय एकीकरण के मद्देनजर एक समरूप राष्ट्रीय कैलेंडर की ज़रूरत मेहसूस हुई जोकि आधुनिक खगोलिय तथ्यों पर आधारित हो ।

इन सबको नजर में रखते हुए, भारत सरकार ने स्वर्गीय प्रोफेसर मेघनाद साहा के अध्यक्षता में एक “Calendar Reform Committee” का गठन किया ।

एक वैज्ञानिक एवं समरूप प्रणाली से निर्मित पूरे देश का कैलेंडर बनाने के लिए नवंबर 1952 में सी.एस.आई.आर के अंतर्गत कैलेंडर रिफोर्म कमिटी का गठन किया गया जिसके अध्यक्ष स्वर्गीय प्रो. एम. एन. साहा थे एवं अन्य छः सदस्य इस क्षेत्र के प्रख्यात विशेषज्ञ थे ।

कमिटी ने अपनी रिपोर्ट 1955 में प्रस्तुत की जिसमें उष्णदेशीयया सयन वर्ष सौर कैलेंडर को समरूप नागरिक कैलेंडरके तौर पर पेश किया गया एवं एक उष्णदेशीय लूनी-सोलर कैलेंडर जिसमें लूनर कैलेंडर उष्णदेशीय सौर कैलेंडर से संबंधित हो एवं जो धार्मिक एवं सामाजिक विषयों के लिए हो ।

कमिटी ने इंडियन ऐफेमेरिस एवं नौटिकल अल्मनाक बनाने की सिफारिश की जिसमें व्यावहारिक खगोलिय तथ्य जो आधुनिक खगोलिय सूत्रों द्वारा परिगणित हो , एवं भारतीय राष्ट्रीय कैलेंडर( साका ऐरा ) जोकि Tropical Solar Calendar है जिसमें तिथियों के समय, नक्षत्र, योग और त्योहारों के दिनांक हो ।

कमिटी ने ये भी सिफारिश की की Tropical Solar Calendar के साथ, राष्ट्रीय कैलेंडर को राष्ट्रीय पंचांग के रूप में नागरिक उपयोगों के लिए प्रकाशित किया जाए ।

सरकार ने कैलेंडर रिफोर्म कमिटी की सारी सिफारिशें मान ली सिवाए इसके की उष्णदेशीय लूनी-सोलर कैलेंडरका अभिग्रहण हो एवं एक “राष्ट्रीय कैलेंडर” को 22 मार्च 1957 को प्रस्तुत किया गया ।

भारत सरकार ने ऊपर निर्देशित सिफारिशें मान ली एवं ये निर्णय लिया कि ग्रेगोरिअन कैलेंडर का इस्तेमाल आधिकारिक एवं नागरिक प्रयोजनों के लिए जारी रहे साथ में राष्ट्रीय कैलेंडर का अभिग्रहण भी कुछ आधिकारिक प्रयोजनों के लिए किया जाए । तदनुसार भारत मौसम विज्ञान विभाग ने राष्ट्रीय कैलेंडर एवं राष्ट्रीय पंचांग बनाने का काम अपने हाथ में लिया ।

भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय कैलेंडर 22 मार्च,1957 को प्रस्तुत किया गया जोकि 1 चैत्र,1879 साका ऐरा राष्ट्रीय कैलेंडर का प्रथम दिवस था ।

इस प्रकार कैलेंडर एवं पंचांग को लोकप्रिय बनाने के लिए समय-समय पर कदम उठाये गये एवं सरकार द्वारा स्थापित कमिटीयों के सिफारिशो के अनुसार उन्हें बनाया गया ।

राष्ट्रीय कैलेंडर की स्थिति की समीक्षा करने एवं इसको पंचांग निर्माताओं के बीच लोकप्रिय बनाने के लिए कुछ समीक्षा समितियों का गठन हुआ एवं अंततः एक Peer Review Committee का राष्ट्रीय कैलेंडर एवं स्थितिय खगोल शास्त्र के लिए , Department of Science and Technology (DST) के अंतर्गत 1988 में गठन हुआ ।

कमिटी ने अपनी रिपोर्ट 2002 में प्रस्तुत की जिसमें एक All India sidereal solar calendar के निर्माण की संस्तुति दी , जिसके दिनांक राष्ट्रीय पंचांग में प्रकाशित हो । 2004 में वैसा ही कैलेंडर राष्ट्रीय पंचांग में प्रकाशित हुआ ।

पंचांग के वर्तमान प्रारूप का इस्तेमाल Standing Advisory Committee के द्वारा सुझाए गये विविध संशोधनों को प्रयोग में लाने के पश्चयात् किया गया ।



THANK YOU